7

बच्चों से बारह सवाल

स्कूली बच्चों को पृथ्वी ग्रह की खूबियों से वाकिफ करवाना, पृथ्वी पर मण्डरा रहे खतरों से आगाह करना और इनके वजहों की तह तक जाना - अन्तर्राष्ट्रीय पृथ्वी ग्रह वर्ष का प्रमुख उद्देश्य था। इसके लिए देश भर में कई प्रोजेक्ट बने और कार्यक्रम भी हुए। लेकिन डी. बालसुब्रमण्यन ने अपने ग्रह के बारे में सोचने के लिए एक अलग रास्ता सुझाया। उन्होंने बच्चों से बारह सवाल किए। ये सवाल हमें नई दिशाओं में और नए तरीके से सोचने पर मजबूर करते हैं।

समझ में मदद के लिए भौतिक शास्त्र कैसे पढ़ाएँ?

बीसवीं सदी के मध्य तक शिक्षा में व्यवहारवाद का बोलबाला था। लेकिन 60 के दशक में कई पश्चिमी देशों में स्कूली स्तर के विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम शुरू हुए। भारत भी इन सब से अछूता न रहा। इसी सिलसिले में एक पहल सत्तर के दशक में होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम के रूप में देखी गई।

इस व्याख्यान में विजय वर्मा ने 'शिक्षा में व्यवहारवाद और निर्माणवाद के क्या मायने हैं?', 'किस उम्र में विज्ञान शिक्षण शुरू करना चाहिए?' सहित 'विद्यार्थियों में पनपने वाली गलत संकल्पनाओं और आम मान्यताओं' जैसे सवालों पर विस्तार से चर्चा की है।

49

शैक्षणिक संदर्भ

अंक-5, (मूल अंक-62) नवम्बर 2008-फरवरी 2009

इस अंक में

7 **बच्चों से बारह सवाल**
डी. बालसुब्रमण्यन

17 **बैक्टीरिया का वर्गीकरण**
सुशील जोशी

25 **नया साल एक सेकण्ड देरी से आया**
टी.वी. वेंकटेश्वरन्

29 **पाठ्य पुस्तक के नए स्वर**
कमलेश चन्द्र जोशी

43 **सवालों में छिपी हुई सम्भावनाओं ...**
चन्दन यादव

49 **समझ में मदद के लिए भौतिक शास्त्र ...**
विजय वर्मा

64 **भौतिकी में छोटी लम्बाई का मापन**
विक्रम चौरे

77 **मेरी गणित की कक्षाएँ और सौरभ**
मो. उमर

83 **बच्चे और बूढ़े लोग**
इवान चैंकर

88 **हथियार - एक टिप्पणी**
सुशील शुक्ल

91 **तोहफे वाला पेन**
माधव केलकर